काव्य वेणु

पाठ्य पुस्तक

बी. एससी./बी.एससी.(फैड)/बी.वी.एससी./
एम.एससी. (जैविक विज्ञान)/ बी.एस. (4)
चयन आधारित क्रेडिट पद्धति
(सी.बी.सी.एस.)

संपादक
डॉ. शेखर
डॉ. बबिता बी.एम.

प्रकाशक
प्रसारांग
बेंगलूरु केन्द्र विश्वविद्यालय
बेंगलूरू-560 001

KAVYA VENU : Edited by Dr. Shekhar & Dr. Babitha B.M.; Published by Prasaranga, Bangalore Central University, Bengaluru - 560 001 PP. 41+VIII

© : बेंगलूरु केन्द्र विश्वविद्यालय

प्रथम संस्करण : 2019

संपादक :
डॉ. शेखर
डॉ. बबिता बी.एम.

मूल्यः

प्रकाशक एवं मुद्रक :
प्रसारांग
बेंगलूरु केन्द्र विश्वविद्यालय
बेंगलूरु–560001

भूमिका

बेंगलूरु विश्वविद्यालय के त्रिभाजन के बाद, यह पहला अवसर है कि बेंगलूरु केन्द्र विश्वविद्यालय के अन्तर्गत हिन्दी विभाग के अध्यक्ष प्रो. शेखर के मार्गदर्शन में हिन्दी अध्ययन मण्डल ने बी.एससी./बी. एससी.(फैड) /बी.वी.एससी./एम.एससी.(जैविक विज्ञान)/बी.एस.(4) के छात्रों के लिए नव पाठ्य पुस्तक का निर्माण किया है। 2004–05 में लागू हुए सेमिस्टर प्रणाली का अनुसरण करते हुए प्रस्तुत पुस्तक चयन आधारित क्रेडिट पद्धति (सी.बी.सी.एस.) पर आधारित पाठ्यक्रम है।

आशा है कि प्रस्तुत संकलन बी.एससी./बी. एससी.(फैड) /बी.वी.एससी./एम.एससी.(जैविक विज्ञान)/बी.एस.(4) के विद्यार्थियों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा। इस पाठ्य पुस्तक के निर्माण में प्रत्यक्ष एवं परोक्ष रूप से जिन लोगों का योगदान रहा है, उनके प्रति विश्वविद्यालय आभारी है।

इस संकलन को बहुत कम समय में उत्कृष्ट रूप से छापने वाले मुद्रणालय के समस्त कर्मचारियों तथा पुस्तक के प्रकाशक, प्रसारांग बेंगलूरु केन्द्र विश्वविद्यालय के प्रति भी हम आभारी हैं।

प्रो. जाफट एस.
कुलपति
बेंगलूरु केन्द्र विश्वविद्यालय
बेंगलूरू–560001

प्रकाशक की बात

बेंगलूरु केन्द्र विश्वविद्यालय ने बी.एससी./बी.एससी.(फैड) /बी.वी.एससी./एम.एससी.(जैविक विज्ञान)/बी.एस.(4) स्नातक वर्ग के लिए चयन आधारित क्रेडिट पद्धति (सी.बी.सी.एस.) के अनुसार हिन्दी विभागाध्यक्ष डॉ. शेखर के मार्गदर्शन में हिन्दी अध्ययन मंडल के द्वारा प्रस्तुत पाठ्य पुस्तक काव्य वेणु का निर्माण किया है।

इस पाठ्य–पुस्तक को समय पर तैयार करने में विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. जाफट एस का प्रोत्साहन व सहयोग रहा है, तदर्थ मैं उनके प्रति आभारी हूँ।

प्रस्तुत संकलन को अल्प समय में सुन्दर ढंग से छापने में सहयोग करने वाले मुद्रणालय, प्रसारांग बेंगलूरू केन्द्र विश्वविद्यालय के सभी कर्मचारियों के प्रति भी मैं कृतज्ञ हूँ।

प्रसारांग
बेंगलूरु केन्द्र विश्वविद्यालय
बेंगलूरु–560001

अध्यक्ष की बात

साहित्य के क्षेत्र में समय और समाज के परिवर्तन के अनुरूप साहित्यकारों द्वारा कुछ न कुछ नया लिखा जाता रहा है। साहित्यकार समाज का अभिन्न अंग है, इसलिए उनकी रचनाओं को आलोचनात्मक दृष्टि से परखना पड़ता है। आलोचना और रचना में गहरा सम्बन्ध होता है। इस परिप्रेक्ष्य में आज के युवा छात्र वर्ग और सेमिस्टर प्रणाली को ध्यान में रखते हुए इस पाठ्य संकलन में कुछ ऐसी नई और पुरानी कविताओं को शामिल किया गया है, जो मानव जीवन के समग्र पक्षों को दर्शाती हैं। इनका अध्ययन छात्रों में जीवन दर्शन, मानवीय संवेदनाओं और जीवन मूल्यों के प्रति नई सोच विकसित करने के साथ ही मानवीय पक्ष को सशक्त करेगा, इसी दृष्टि से इस पाठ्य पुस्तक का निर्माण किया गया है। इस कार्य में सहयोग देने वाले संपादकों डॉ. शेखर एवं डॉ. बबिता बी.एम. के प्रति मैं अपना आभार प्रकट करता हूँ।

इस नई पाठ्य पुस्तक के निर्माण में विश्वविद्यालय के कुलपति महोदय डॉ. जाफट एस. ने अत्यधिक प्रोत्साहन दिया, तदर्थ मैं उनके प्रति हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

पुस्तक के प्रकाशक एवं मुद्रणालय के सभी कर्मचारियों के प्रति भी मैं आभारी हूँ।

डॉ. शेखर
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
बेंगलूर विश्वविद्यालय

सम्पादक की कलम से...

साहित्य किसी समाज को समझने–परखने और अभिव्यक्त करने का सशक्त माध्यम होता है। इसलिए साहित्य और समाज के विविध सरोकारों पर चर्चाएं होती रहती हैं और भिन्न–भिन्न कसौटियों पर इसके मूल्यांकन भी होते रहते हैं। प्रत्येक रचनाकार के पास एक बिम्ब होता है, जिसमें वह जीता है और लगातार अपने युग विशेष की परिस्थितियों से संघर्षरत रहता है, उनसे प्रभावित होता है और उन्हें प्रभावित भी करता है।

हिन्दी साहित्य का आरंभ करने वाले सिद्ध और नाथ पंथी योगी समस्त भारत में घूम–घूम कर अपने काव्यों के माध्यम से आठवीं शताब्दी से बारहवीं शताब्दी तक राष्ट्र की एकता का प्रचार–प्रसार करते रहे। उन्होंने एक भाषा तैयार की जिसमें भारत की सभी क्षेत्रीय भाषाओं के बहु प्रचलित शब्दों के प्रवेश का द्वार खुला। इन्हीं सिद्ध और नाथ पंथियों के प्रयास से उस भाषा का विकास हुआ, जिसे कालान्तर में या आज हिन्दी कहा जाता है।

वीर गाथा काल से लेकर आधुनिक काल की खड़ी बोली तक कई कवियों ने हिन्दी पद्य साहित्य को समृद्ध किया है। लेकिन भूमंडलीकरण, निजीकरण, व्यावसायिकता और बाज़ारवाद के इस युग में साहित्य की प्रासंगिकता लुप्त न हो जाये, इसलिए युवापीढ़ी के उस वर्ग के समक्ष साहित्यिक विचार रखने का प्रयास किया गया है, जो बदलते हुए परिवेश से अधिक प्रभावित है। यकीनन युवापीढ़ी की सोच बदल रही है और उनके पैरों तले जमीन खिसक रही है, जिसका उन्हें एहसास नहीं हो रहा है। उनमें एक सतही मानसिकता पनप रही है, जिसके कारण सार्थक जीवन मूल्यों से उनके भटकने की संभावना बढ़ गयी है। इस संदर्भ में यह अत्यावश्यक है

कि उनमें अपने देश, समाज और साहित्य के प्रति जिम्मेदारी निभाने की सोच विकसित हो।

इस उद्देश्य से प्रस्तुत काव्य संग्रह काव्य वेणु में ऐसी कुछ कविताओं का चयन किया गया है, जो विज्ञान के विद्यार्थियों को वैज्ञानिक दुनिया में प्रगतिशील होने के साथ–साथ भारतीय समाज, साहित्य और संस्कृति से भी जोड़े रख सकें।

प्रस्तुत संकलन में जिन कवियों की कवितायें संग्रहीत हैं, उनके प्रति हम आभारी हैं। आशा करते हैं कि प्रस्तुत पुस्तक विद्यार्थियों में सामाजिक सरोकार की भावना के साथ–साथ उन में मानवीय मूल्यों को भी प्रबल करने में सक्षम होगी।

डॉ. शेखर
डॉ. बबिता बी.एम.

अनुक्रमणिका

			पृष्ठ संख्या
1.	कबीर के दोहे	कबीर दास	1
2.	मीराबाई के पद्य	मीराबाई	3
3.	कर्मवीर	अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	5
4.	मैं प्रिय पहचानी नहीं	महादेवी वर्मा	7
5.	हमारे कृषक	रामधारीसिंह 'दिनकर'	9
	वीर		11
6.	पत्थर की बैंच	चंद्रकांत देवताले	13
7.	बच्चे काम पर जा रहे हैं	राजेश जोशी	14
	मारे जाएंगे		16
8.	सुभाष नगर	बद्री नारायण	17
9.	सुख-दुख	नरेन्द्र शर्मा	20
	कुछ भी बन बस कायर मत बन		22
10.	बस्स ! बहुत हो चुका	ओमप्रकाश वाल्मीकि	24
	कवि परिचय		26
परिशिष्ट :			41
1.	वैज्ञानिक शब्दावली		

1. कबीर के दोहे

– कबीरदास

सतगुरु के सदकै करूँ, दिल अपणों का साछ।
कलियुग हम स्यँ लड़ि पड्या, मुहकम मेरा बाछ।। ।।1।।

चकवी विछुटी रौण की, आइ मिली परभाति।
जे जन बिछुटे राम सू, ते दिन मिले न राति।। ।।2।।

अंतरि कवल प्रकासिया, ब्रह्म बास तहाँ होई।
मन भवरा तहाँ लुबधिया, जांणौंगा जन कोई।। ।।3।।

सबै रसांइण मैं किया, हरि सा और न कोई।
तिल इक घट मैं संचरै, तौ सब तन कंचन होई।। ।।4।।

मन उलट्या दरिया मिल्या, लागा मलि मलि न्हांन।
थाहत थाह न आवई, तूं पूरा रहिमांन।। ।।5।।

जब लग भगति सकांमता, तव लग निर्फल सेव।
कहै कबीर वै क्यूँ मिलैं, निहकामी निज देव।। ।।6।।

कबीर पटण कारिवां, पंच चोर दस द्वार।
जम रांणौं गढ़ भेलिसि, सुमिरि लै करतार।। ।।7।।

कबीर सेरी सांकड़ी, चंचल मनवां चोर।
गुण गावै लैली न होइ, कछू एक मन मैं और।। ।।8।।

कबीर माया मोहनी, सब जग घाल्या घांणि।
कोई एक जन ऊबरै, जिनि तोड़ी कुल की कांणि।। ।।9।।

निरमल बूँद अकास की, पड़ि गई भोमि बिकार।
मूल बिनंठा मांनवी, बिन संगति भठछार।।।।10।।

***

2. मीराबाई के पद

– मीराबाई

मण थें परस हरि रे चरण ।। टेक ।।
सुभग सीतल कँवल कोमल, जगत ज्वाला हरण।
इण चरण प्रहलाद परस्याँ, इन्द्र पदवी धरण।
इण चरण ध्रुव अ्रटल करस्याँ, सरण असरण सरण।
इण चरण ब्रह्माण्ड भेट्याँ, नखसिखाँ सिरी भरण।
इण चरण कलियाँ नाथ्याँ, गोपीलीला करण।
इण चरण गोवरधन धारयाँ गरब मधवा हरण।
दासि मीराँ लाल गिरधर, श्रगम तारण तरण ।। 1 ।।

गिरधर रूसणाँ जी कौन गुनाह ।। टेक ।।
कुछ इक ओगुण काढ़ो म्हाँ छै, म्हें जी कानाँ सुणा।
मैं दासी थारी जनम जनम की, थे साहिब सुगणाँ।
काँइ बात सूँ करवौ रूसणाँ, क्यों दु:ख पावौ छो मना।
किरप करि मोहि दरसण दीज्यो, बीते दिवस घणाँ।
मीराँ के प्रभु हरि अबिनासी, थाँरो ही नाँव गणाँ।। 2 ।।

पलक न लागै मेरी स्याम बिना ।। टेक ।।
हरि बिनु मथुरा ऐसी लागै, शशि बिन रैन अँधेरी।
पात पात वृन्दावन ढूँढ्यो, कुँज कुँज ब्रज केरी।
ऊँचे खड़े मथुरा नगरी, तले बहै जमना गहरी।
मीरा के प्रभु गिरधरनागर, हरि चरणन की चेरी।

मीरा मगन भई हरि के गुण गाय ।। टेक ।।
साँप पिटारा राणा भेज्यो, मीराँ हाथ दियो जाय।

न्हाय धोय जब देखण लागी, सालिगराम गई पाय।
जहर का प्याला राणा भेज्या, अमृत दीन्ह बनाय।
न्हाय धोय जब पीवणा लगी, हो अमर अँचाय।
सूल सेज राणा ने भेजी, दीज्यो मीराँ सुलाय।
साँझ भई मीराँ सेवण लागी, मानो फूल बिछाय।
मीराँ के प्रभु सदा सहाई, राखे विघन हटाय।
भजन भाव में मस्त डोलती, गिरधर पै बलि जाय।।

हरि बिन कूण गती मेरी ।। टेक ।।
तुम मेरे प्रतिपाल कहियै, मैं रावरी चेरी।
आदि अंत निज नाँव तेरो, हीया में फेरी।
बेरि बेरि पुकारि कहूँ, प्रभु आरति है तेरी।
यौ संसार विकार सागर, बीच में घेरी।
नाव फाटी प्रभु पाल बाँधो, बड़त है बेरी।
बिरहणि पिवकी बाट जोवँ, राखिल्यौ नेरी।
दासि मीराँ राम रटत है, मैं सरण हूँ तेरी।।

जगमाँ जीवणा थोड़ा कुणो लयाँ भवसार ।। टेक ।।
मात-पिता जग जन्म दियां री, करम दियां करतार।
खायाँ खरचाँ जीवण जावाँ, कोई कर्‌या उपकार।
साधो संगत हरिगुण गास्या, और णा म्हारी लार।
मीराँ रे प्रभु गिरधर नागर, थें बल उतर्‌या पार।।

***

3. कर्मवीर

– अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध'

देख कर बाधा विविध, बहु विघ्न घबराते नहीं
रह भरोसे भाग के दुख भोग पछताते नहीं
काम कितना ही कठिन हो किन्तु उबताते नहीं
भीड़ में चंचल बने जो वीर दिखलाते नहीं
हो गये एक आन में उनके बुरे दिन भी भले
सब जगह सब काल में वे ही मिले फूले फले।

आज करना है जिसे करते उसे हैं आज ही
सोचते कहते हैं जो कुछ कर दिखाते हैं वही
मानते जो भी हैं सुनते हैं सदा सबकी कही
जो मदद करते हैं अपनी इस जगत में आप ही
भूल कर वे दूसरों का मुँह कभी तकते नहीं
कौन ऐसा काम है वे कर जिसे सकते नहीं।

जो कभी अपने समय को यों बिताते हैं नहीं
काम करने की जगह बातें बनाते हैं नहीं
आज कल करते हुये जो दिन गंवाते हैं नहीं
यत्न करने से कभी जो जी चुराते हैं नहीं

बात है वह कौन जो होती नहीं उनके लिये
वे नमूना आप बन जाते हैं औरों के लिये।

व्योम को छूते हुए दुर्गम पहाड़ों के शिखर
वे घने जंगल जहाँ रहता है तम आठों पहर
गर्जते जल–राशि की उठती हुयी ऊँची लहर
आग की भयदायिनी फैली दिशाओं में लपट
ये कंपा सकती कभी जिसके कलेजे को नहीं
भूलकर भी वह नहीं नाकाम रहता है कहीं।।

***

4. मैं प्रिय पहचानी नहीं

– महादेवी वर्मा

पथ देख बिता दी रैन
मैं प्रिय पहचानी नहीं!

तम ने धोया नभ–पंथ
सुवासित हिमजल से;
सूने आँगन में दीप
जला दिये झिल–मिल से;
आ प्रात बुझा गया कौन
अपरिचित, जानी नहीं!
मैं प्रिय पहचानी नहीं।

धर कनक–थाल में मेघ
सुनहला पाटल सा,
कर बालारूण का कलश
विहग–रव मंगल सा,
आया प्रिय–पथ से प्रात–
सुनायी कहानी नहीं!
मैं प्रिय पहचानी नहीं!

नव इन्द्रधनुष सा चीर
महावर अंजन ले,
अलि–गुंजित मीलित पंकज–
नूपुर रुनझुन ले,

फिर आयी मनाने साँझ
मैं बेसुध मानी नहीं!
मैं प्रिय पहचानी नहीं!

इन श्वासों का इतिहास
आँकते युग बीते;
रोमों में भर-भर पुलक
लौटते पल रीते;
यह ढुलक रही है याद
नयन से पानी नहीं !
मैं प्रिय पहचानी नहीं !

अलि कुहरा सा नभ विश्व
मिटे बुदबुद-जल सा;
यह दु:ख का राज्य अनन्त
रहेगा निश्चल सा;
हूँ प्रिय की अमर सुहागिनि
पथ की निशानी नहीं !
मैं प्रिय पहचानी नहीं !

***

5. हमारे कृषक

– रामधारीसिंह 'दिनकर'

जेठ हो कि हो पूस, हमारे कृषकों को आराम नहीं है
छूटे कभी संग बैलों का ऐसा कोई याम नहीं है

मुख में जीभ शक्ति भुजा में जीवन में सुख का नाम नहीं है
वसन कहाँ? सूखी रोटी भी मिलती दोनों शाम नहीं है

बैलों के ये बंधू वर्ष भर क्या जाने कैसे जीते हैं
बंधी जीभ, आँखें विषम गम खा शायद आँसू पीते हैं

पर शिशु का क्या, सीख न पाया अभी जो आँसू पीना
चूस–चूस सूखा स्तन माँ का, सो जाता रो–विलप नगीना

विवश देखती माँ आँचल से नन्हीं तड़प उड़ जाती
अपना रक्त पिला देती यदि फटती आज वज्र की छाती

कब्र–कब्र में अबोध बालकों की भूखी हड्डी रोती है
दूध–दूध की कदम–कदम पर सारी रात होती है

दूध–दूध औ वत्स मंदिरों में बहरे पाषान यहाँ है
दूध–दूध तारे बोलो इन बच्चों के भगवान कहाँ है

दूध–दूध गंगा तू ही अपनी पानी को दूध बना दे
दूध–दूध उफ कोई है तो इन भूखे मुर्दों को जरा मना दे

दूध–दूध दुनिया सोती है लाऊँ दूध कहाँ किस घर से
दूध–दूध हे देव गगन के कुछ बूँदे टपका अम्बर से

हटो व्योम के, मेघ पंथ से स्वर्ग लूटने हम आते हैं
दूध–दूध हे वत्स! तुम्हारा दूध खोजने हम जाते हैं

***

वीर

सच है, विपत्ति जब आती है,
कायर को ही दहलाती है,
सूरमा नहीं विचलित होते,
क्षण एक नहीं धीरज खोते,
विघ्नों को गले लगाते हैं
काँटों में राह बनाते हैं।

मुँह से न कभी उफ़ कहते हैं,
संकट का चरण न गहते हैं,
जो आ पड़ता सब सहते हैं,
उद्योग–निरत नित रहते हैं,
शुलों का मूळ नसाते हैं,
बढ़ खुद विपत्ति पर छाते हैं।

है कौन विघ्न ऐसा जग में,
टिक सके आदमी के मग में?
ख़म ठोंक ठेलता है जब नर
पर्वत के जाते पांव उखड़,
मानव जब जोर लगाता है,
पत्थर पानी बन जाता है।

गुन बड़े एक से एक प्रखर,
हैं छिपे मानवों के भितर,
मेंहदी में जैसी लाली हो,
वर्तिका–बीच उजियाली हो,
बत्ती जो नहीं जलाता है,
रोशनी नहीं वह पाता है।

***

6. पत्थर की बैंच

– चंद्रकांत देवताले

पत्थर की बैंच
जिस पर रोता हुआ बच्चा
बिस्कुट कुतरते चुप हो रहा है

जिस पर एक थका युवक
अपने कुचले हुए सपनों को सहला रहा है

जिस पर हाथों से आँखे ढाँप
एक रिटायर्ड बूढ़ा भर दोपहरी सो रहा है

जिस पर वे दोनों
जिंदगी के सपने बुन रहे हैं

पत्थर की बैंच
जिस पर अंकित है आँसू, थकान
विश्राम और प्रेम की स्मृतियाँ

इस पत्थर की बैंच के लिए भी
शुरू हो सकता है किसी दिन
हत्याओं का सिलसिला
इसे उखाड़ कर ले जाया
अथवा तोड़ा भी जा सकता है
पता नहीं सबसे पहले कौन आसीन हुआ होगा
इस पत्थर की बैंच पर !

***

7. बच्चे काम पर जा रहे हैं

– राजेश जोशी

कोहरे से ढँकी सड़क पर बच्चे काम पर जा रहे हैं
सुबह–सुबह

बच्चे काम पर जा रहे हैं
हमारे समय की सबसे भयानक पंक्ति है यह
भयानक है इसे विवरण की तरह लिखा जाना
लिखा जाना चाहिए इसे सवाल की तरह

काम पर क्यों जा रहे हैं बच्चे ?

क्या अन्तरिक्ष में गिर गई हैं सारी गेंदें
क्या दीमकों ने खा लिया है
सारी रंग–बिरंगी किताबों को
क्या काले पहाड़ के नीचे दब गए हैं सारे खिलौने
क्या किसी भूकम्प में ढह गई हैं
सारे मदरसों की इमारतें
क्या सारे मैदान, सारे बगीचे और घरों के आँगन
खत्म हो गए हैं एकाएक
तो फिर बचा ही क्या है इस दुनिया में ?
कितना भयानक होता अगर ऐसा होता
भयानक है लेकिन इससे भी ज्यादा यह

कि हैं सारी चीज़ें हस्बमामूल

पर दुनिया की हज़ारों सड़कों से गुज़रते हुए
बच्चे, बहुत छोटे–छोटे बच्चे
काम पर जा रहे हैं।

***

मारे जाएंगे

जो इस पागलपन में शामिल नहीं होंगे, मारे जाएँगे

कठघरे में खड़े कर दिये जाएँगे
जो विरोध में बोलेंगे
जो सच–सच बोलेंगे, मारे जाएँगे

बर्दाश्त नहीं किया जाएगा कि किसी की कमीज हो
उनकी कमीज से ज्यादा सफ़ेद
कमीज पर जिनके दाग नहीं होंगे, मारे जाएँगे

धकेल दिये जाएँगे कला की दुनिया से बाहर
जो चारण नहीं होंगे
जो गुण नहीं गाएँगे, मारे जाएँगे

धर्म की ध्वजा उठाने जो नहीं जाएँगे जुलूस में
गोलियाँ भून डालेंगी उन्हें, काफिर करार दिये जाएँगे

सबसे बड़ा अपराध है इस समय निहत्थे और निरपराधी होना
जो अपराधी नहीं होंगे, मारे जाएँगे

***

8. सुभाष नगर

– बद्री नारायण

शहर इलाहाबाद में है एक नगर सुभाष नगर
रईसों की बस्ती और नगर कोतवाल की कोठी के ठीक
बीचोंबीच
कहते हैं यह बस्ती
इस शहर को बनाने वालों की बस्ती है
राय साहब टंडन जी की हवेली
इस शहर की शान है
जो इसी बस्ती के सूदन के बाबा ने बनाई थी
सूदन स्वयं था गणनायक, सिविल लाइन में बनने
वाले सबसे सुन्दर एवं महँगे माल का
कहते हैं कि सूदन के बाबा इतने अच्छे राजमिस्त्री थे
जिन्हें बुलाने अँग्रेज भी चलकर उनकी
झोंपड़ी तक आते थे

सुभाष नगर मुहल्ला है ऐसे लोगों का
जिन्होंने बनाई हैं वे सड़कें
जिन पर वे निश्चिन्त हो चल नहीं सकते
इन्होंने जो पार्क बनाए हैं उस पार्क में वे फुरसत
के क्षण बिता नहीं सकते

जो भवन, जो अपार्टमेंट्स वे बनाते हैं
उसमें नहीं होती उनके लिए कहीं इंच भर भी जगह

किन्तु ठीक से जान ले नागरिक समाज
अगर शहर है तो उन्हें नहीं किया जा सकता कभी शहर बदर

ज्यों–ज्यों बनेंगी पॉश कालोनियाँ
उनके बीच के कूड़ा फेंके जानेवाली जगह पर
वे महफूज़ हो बना लेंगे अपनी बस्तियाँ
जहाँ से कोई तोप, कोई पुलिस उन्हें हटा नहीं सकती
नगर निगम उनके रहने के अधिकार को
अवैध मानकर भी अवैध ठहरा नहीं सकती

जैसे–जैसे बढ़ेगा शहर
वैसे–वैसे बढ़ेंगे सुभाष नगर
वे शहर की अभिजात्यता के ख़िलाफ़
उसकी ज़रूरत बन बढ़ेंगे
वे रहेंगे इस शहर के नागरिक समाज के
भीतर अपराध–बोध बनकर
वे भारतीय आज़ादी की साठ साल की आलोचना बन बढ़ेंगे
वे उभरेंगे शालीन चेहरों की शालीनता के ख़िलाफ़
उस पर गुम्मड़ बनकर
लोकतंत्र के चेहरे पर दाग बनकर रहेंगे

वे रहेंगे शहर के इतिहास में इतिहास के ख़िलाफ़
वे शहर के भूगोल का प्रतिरोध बनकर रहेंगे

रहेगा सूदन तो रहेंगे सूदन के बाबा भी
वे सब शहर की बनी–बनाई परिभाषा को
तोड़ते हुए रहेंगे।

***

9. सुख–दुःख

– नरेन्द्र शर्मा

जब तक मन में दुर्बलता है
दुख से दुख, सुख से ममता है।

पर सदा न रहता जग में सुख
रहता सदा न जीवन में दुख।
छाया–से माया–से दोनों
आने–जाने हैं ये सुख–दुःख।

मन भरता मन, पर क्या इनसे
आत्मा का अभाव भरता है।

बहुत नाज था अपने सुख पर
पर न टिका दो दिन सुख–वैभव,
दुःख ? दुःख को भी समझा सागर
एक बूँद भी नहीं रहा अब !

देखा जब दिन–रात चीड़–वन
नित कराह आहें भरता है !

मैंने दुख–कातर हो–होकर
जब–जब दर–दर कर फैलाया,
सुख के अभिलाषी मन मेरे
तब–तब सदा निरादर पाया।

ठोकर खा–खाकर पाया है
दुख का कारण कायरता है।

सुख भी नश्वर, दुख भी नश्वर
यद्यपि सुख–दुख सबके साथी
कौन घुले फिर सोच–फिकर में
आज घड़ी क्या है, कल क्या थी।

देख तोड़ सीमायें अपनी
जोगी नित निर्भय रमता है।

जब तक तन है, आधि–व्याधि है
जब तक मन, सुख–दुख है घेरे;
तू निर्बल तो क्रीत भृत्य है,
तू चाहे ये तेरे चेरे।

तू इनसे पानी भरवा, भर
ज्ञान कूप, तुझमें क्षमता है।
सुख–दुख के पिंजर में बंदी
कीर धुन रहा सिर बेचारा,
सुख–दुख के दो तीर चीर कर
बहती नित गंगा की धारा।

तेरा जी चाहे जो बन ले,
तू अपना करता–हरता है।

***

कुछ भी बन, बस कायर मत बन

कुछ भी बन बस कायर मत बन,
ठोकर मार पटक मत माथा तेरी राह रोकते पाहन।
कुछ भी बन बस कायर मत बन।

युद्ध देही कहे जब पामर,
दे न दुहाई पीठ फेर कर
या तो जीत प्रीति के बल पर
या तेरा पथ चूमे तस्कर
प्रतिहिंसा भी दुर्बलता है
पर कायरता अधिक अपावन
कुछ भी बन बस कायर मत बन।

ले–दे कर जीना क्या जीना
कब तक गम के आँसू पीना
मानवता ने सींचा तुझ को
बहा युगों तक खून–पसीना
कुछ न करेगा किया करेगा
रे मनुष्य बस कातर क्रंदन
कुछ भी बन बस कायर मत बन।

तेरी रक्षा का ना मोल है
पर तेरा मानव अमोल है

यह मिटता है वह बनता है
यही सत्य कि सही तोल है
अर्पल कर सर्वस्व मनुज को
न कर दुष्ट को आत्मसमर्पण
कुछ भी बन बस कायर मत बन।

***

10. बस्स ! बहुत हो चुका

– ओमप्रकाश वाल्मीकि

जब भी देखता हूँ मैं
झाड़ू या गन्दगी से भरी बाल्टी–कनस्तर
किसी हाथ में
मेरी रगों में
दहकने लगते हैं
यातनाओं के कई हज़ार वर्ष एक साथ
जो फैले हैं इस धरती पर
ठंडे रेत कणों की तरह

मेरी हथेलियाँ भीग–भीग जाती हैं
पसीने से
आँखों से उतर आता है
इतिहास का स्याहपन
अपनी आत्मघाती कुटिलताओं के साथ।

झाड़ू थामे हाथों की सरसराहट
साफ सुनाई पड़ती है भीड़ के बीच
बियावान जंगल में सनसनाती हवा की तरह।

वे तमाम वर्ष
वृत्ताकार होकर घूमते हैं
करते हैं छलनी लगातार

उँगलियों और हथेलियों को
नस–नस में समा जाता है ठंडा–ताप।

गहरी पथरीली नदी में
असंख्य मूक पीड़ाएँ
कसमसा रही हैं
मुखर होने के लिए रोष से भरी हुई।

बस्स !
बहुत हो चुका
चुप रहना
निरर्थक पड़े पत्थर
अब काम आएँगे सन्तप्त जनों के !

***

कवि परिचय

1. कबीरदास (1398 – 1518)

भक्तिकाल के विलक्षण कवि एवं विशिष्ट संत कबीरदास का जन्म सन् 1398 में काशी में हुआ। कहा जाता है कि उनका जन्म एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ में हुआ था। पर उनका लालन–पालन नीरू–नीमा नामक मुसलमान दंपति ने किया। कबीर ने स्वामी रामानंद से दीक्षा ली थी। किंवदंतियों के अनुसार तत्कालीन सूफी संत शेख तकी के संपर्क में भी कबीर आये। इस प्रकार कबीर में हिंदू और इस्लाम धर्मों का मणि–कांचन संयोग पाया जाता है। उन्होंने शास्त्र को नहीं, अनुभव को प्राधान्य दिया था। इसलिए उनकी वाणी जीवन के अनुभव से प्रस्फुटित होकर सहज और हृदयस्पर्शी बन पायी है। आचार्य हजारीप्रसाद द्विवेदी ने कबीर को 'वाणी के डिटेक्टर' कहा तो, कोई अतिश्योक्ति नहीं। कबीर ने अपनी प्रखर बुद्धि और वाणी से धर्म के पाखंड पर करारा व्यंग्य किया। प्रसिद्ध विद्वान–आलोचक डॉ. रामकुमार वर्मा के शब्दों में–''उन्होंने समाज में क्रान्ति–सी उत्पन्न कर दी थी। धर्म के नाम पर किए अनाचार का विरोध कर जन–साधारण की भाषा द्वारा समाज को जागृत करने में कबीर का स्थान सर्वप्रथम है।''

कबीर का देहांत सन् 1518 को मगहर में हुआ। कबीर की वाणी 'बीजक' में संगृहीत है। बाबू श्यामसुंदर दास ने 'कबीर ग्रन्थावली' के नाम से, डॉ. पारसनाथ तिवारी ने भी 'कबीर ग्रन्थावली' के नाम से, कबीर के वचनों के प्रामाणिक संस्करण निकाले हैं।

काव्य वेणु में कबीर के कुछ चुने हुए दोहे शामिल किये गये हैं। इनमें कबीर ने भक्ति, धर्म के आचरण तथा जीवन के बारे में अपने विचार व्यक्त किए हैं। कबीर ने जीवन में निर्मल व्यवहार, प्रेम, करुणा एवं परोपकार, को प्राधान्य दिया। वे व्रत–अनुष्ठान के विरोधी थे। वे पुस्तकीय ज्ञान के नहीं स्वच्छ जीवन के हिमायती थे।

***

शब्दार्थ :

1. **सदकै :** सिदका, बलिहारी जाऊँ। **साछ :** साक्षी। **मुहकम :** प्रबल। **बाछ :** वांच्छा, इच्छा।
2. **रैणि :** रैन, रात्रि। **बिछुटी :** बिछुड़े ।
3. **लबुधिया :** मोहित हुआ। **जन :** भक्तजन।
4. **रसंइण :** रस, विभिन्न साधन। **संचरै :** संचरण करे। **कंचन :** शुद्ध स्वर्ण, निर्मल।
5. **दरिया :** समुद्र। **रहिमांन :** दयालु, परमात्मा।
6. **सकांमता :** स्वार्थ पूर्ण। **निर्फल :** निष्फल, **निहकामी :** निष्कामी।
7. **पटण :** नगर, शरीर। **कारिंवा :** कारवाँ, सार्थवाह। **पंच चोर :** पाँच चोर– काम, क्रोध, मद, लोभ, मोह। **दस द्वारा :** दस छेद,(दो आँख, दो कान, दो नाक, एक मुँह, दो मल–मूत्र तथा ब्रह्मारन्ध्र)। **जमराणौं :** यमराज। **भेलिसि :** नष्ट करेगा।
8. **सेरी :** मार्ग। **सांकडी :** सँकरा। **लैलीन :** लयलीन, तल्लीन।
9. **घाल्या :** मारा। **काणि :** मर्यादा, परम्परा। **घांणि :** धानी।
10. **बिनंठा :** विनष्ठ। **भठ :** भट्टी। **छार :** राख।

***

2. मीराबाई (1504 – 1563)

हिन्दी की अत्यंत लोकप्रिय कवयित्री मीराबाई का जन्म राजस्थान के कुडकी नामक गाँव में सन् 1504 में हुआ। इनके पिता मेड़तिया शाखा के राठौड़ रत्नसिंह थे। मीराबाई का विवाह मेवाड़ के महाराणा साँगा के ज्येष्ठ पुत्र कुँवर भोजराज से सन् 1516 में हुआ। दुर्भाग्यवश वैवाहिक जीवन के सातवें वर्ष में ही मीराबाई को वैधव्य प्राप्त हुआ। बचपन से ही कृष्ण–भक्ति में रंगी हुई मीरा ससुराल में भी दिन–रात और घर–बाहर कन्हैया के भजन–ध्यान में तल्लीन रहने लगीं। लोक–लाज से बेपरवाह मीरा को राणा की ओर से भारी यातनाएँ भुगतनी पड़ीं। पर वे विचलित नहीं हुईं। प्रेम दीवानी मीरा का देहांत सन् 1563 में हुआ। मीरा की कुल ग्यारह रचनाएँ मानी जाती हैं, पर उनकी प्रामाणिकता संदिग्ध है। मीराबाई के स्फुट पद– मीराबाई की पदावली (सं. परशुराम चतुर्वेदी), मीराँ–माधुरी (सं. ब्रजरत्न दास) नामक पुस्तकों में संगृहीत हं।

काव्य वेणु में मीराबाई के कुछ विशिष्ट पद प्रस्तुत किये गये हैं। मीरा 'हरि अविनासी' को समर्पित थीं। उनकी भक्ति में प्रेम, विरह, प्रतीक्षी, व्याकुलता आदि व्यापार पाये जाते हैं। आचार्य रामचन्द्र शुक्त के अनुसार उनके सब पदों में 'प्रेम की तल्लीनता' पाई जाती है। उनका कृष्ण प्रेम निर्मल एवं प्रगाढ़ है। मीरा और कृष्ण का संबंध मधुर तथा चिरंतन है। उनकी विरह–वेदना तीव्र एवं अपार है। उनका प्रेम मांसल नहीं, आत्मिक और आध्यात्मिक है।

***

शब्दार्थ :

1. **परस :** स्पर्श, छू। **हरि :** श्री कृष्ण। **सुभग :** सुन्दर। **सीतल :** शीतल। **दुख :** विमोचक। **कँवल :** कमल। **जगत ज्वाला :** संसार के विविध ताप– दैहिक, दैविक और भौतिक ताप। **परस्याँ :** स्पर्श करके, छूकर। **पदवी :** स्थान। **करस्याँ:** किया। **असरण :** अनाथ। **नखसिखा :** नखशिख तक, पूर्णरूप से। **सिरी :** श्री, शोभा। **कालियाँ :** काली नाग। **नाथ्याँ :** वश में किया। **गरब :** गर्व, दंभ। **मघवा :** इन्द्र। **तारण :** उतारने में। **तरण :** तरणि, नौका।
2. **गुनाह :** अपराध। **ओगुण :** दोष। **म्हैं भी कानाँ सुणाँ :** मैं भी कानों से सुनूँ। **सुगणाँ :** गुण वाले। **घणाँ :** ज्यादा। **नाँव :** नाम। **गणा :** रटा।
3. **पलक न लागै :** नींद नहीं आती। **शशि :** चन्द्रमा। **ब्रज केरी :** ब्रज के। **चेरी :** दासी।
4. **मगन :** प्रसन्न। **अँचाय :** पीकर। **विघन :** बाधा।
5. **कूण :** किसलिए। **जगमाँ :** जग में। **भवसागर :** संसार का बोध, मोह ममता आदि का अनुराग। **करम :** भाग्य। **करतार :** ईश्वर।

***

3. अयोध्यासिंह उपाध्याय 'हरिऔध' (1865-1941)

श्री अयोध्यासिंह उपाध्याय हरिऔध का जन्म उत्तर प्रदेश के निजामाबाद नामक स्थान में हुआ था। पिता अधिक पढ़े-लिखे नहीं थे, किन्तु चाचा अच्छे विद्वान थे। उन्हीं की देखरेख में आपकी शिक्षा-दीक्षा हुई।

आपके साहित्यिक जीवन का प्रभाव भारतेंदु-युग में हुआ। उस समय आप ब्रजभाषा में रचनाएँ करते थे। द्विवेदी युग के आगमन से जब पुरानी मान्यताएँ और दृष्टिकोण बदले, तो आपकी काव्यदिशा में भी मोड़ आ गया और आपने खड़ी बोली को अपनाया। शुरू-शुरू में आपने अपने काव्य में उर्दू के छंदों और ठेठ भाषा को ही स्थान दिया था, किन्तु बाद में संस्कृत छंदों और कोमलकांत पदावली में भी रचनाएँ कीं। आपकी प्रतिभा सिर्फ भारतेंदु-युग और द्विवेदी युग की मान्यताओं के पीछे भटकती नहीं रही, बल्कि युग के साथ कदम बढ़ाती गयी। नवीन धारा का भी आप पर पर्याप्त प्रभाव पड़ा।

भावुक कवि होने के साथ ही आप उपदेशक और आचार्य भी थे। परम्परा को आपने अपने काव्य में स्थान अवश्य दिया, किन्तु पहले उसका परिष्कार किया। 'पति प्रेमिका', 'जातिप्रेमिका', 'देशप्रेमिका' आदि नवीन नायिकाओं की उद्‌भावना आपके सुधारवादी मस्तिष्क की उपज है। अपने प्रसिद्ध महाकाव्य 'प्रियप्रवास' में कृष्ण को आपने पूर्ण मानव के रूप में चित्रित किया है जो रीतिकालीन कवियों के विलासी नायक नहीं हैं, बल्कि समाज के सर्वप्रिय नेता है।

आपके चौपदे बहुत प्रसिद्ध हैं। उनमें बोलचाल की मुहावरेदार भाषा का चमत्कारिक प्रयोग दर्शनीय है।

***

4. महादेवी वर्मा

हिन्दी साहित्य को छायावादी–रहस्यवादी कवयित्री महादेवी वर्मा आधुनिक मीरा कहलाती हैं। इनका जन्म फर्रूखाबाद (उत्तर प्रदेश) में हुआ। इनके पिता श्री गोविंद प्रसाद शर्मा बड़े अध्ययनशील व्यक्ति थे। पिता की अध्ययनशील प्रवृत्ति का प्रभाव महादेवी पर भी पड़ा। माता की स्नेहमयी छाया ने इनके मानस को स्निग्ध सहानुभूतिपूर्ण एवं आर्द्र बना दिया। इलाहाबाद विश्वविद्यालय से दर्शन शास्त्र में एम.ए. करके वही प्रयाग महिला विद्यापीठ की प्रधान आचार्य बनीं।

महादेवी जी आरंभ में ब्रजभाषा में लिखती थीं, बाद में खड़ी बोली में लिखने लगीं। खड़ी बोली के गीति काव्य को इन्होंने अपूर्व संजीविनी शक्ति दी। ये केवल कवयित्री ही नहीं कुशल चित्रकार एवं गद्यकार भी हैं।

महादेवी जी की कविताओं में आरंभ से ही विस्मय, जिज्ञासा व्यथा और आध्यात्मिकता के भाव मिलते हैं। महादेवी की भावभूमि गीतकाव्य के ही उपयुक्त है क्योंकि ये स्वानुभूति की प्रत्यक्ष विवृति करती है। महादेवी जी के गीत भाव प्रधान हैं। उनके विविध गीतों में व्यथा, पीड़ा, आशा, अज्ञात प्रिय के प्रति प्रणय–निवेदन, साधना की विविध अनुभूतियों के स्वर मुखरित हुए हैं। महादेवी जी का अज्ञात प्रियतम के प्रति प्रणय निवेदन दुख प्रधान है। जिस प्रकार घटा स्वयं को गलाकर सृष्टि को सुख और शीतलता प्रदान करती है या दीपक स्वयं जल कर राख हो जाता है किन्तु परिवेश को आलोकित करता है, उसी प्रकार महादेवी जी स्वयं साधना की आग में जलकर सामाजिक जीवन को अधिक सुखद और मंगलमय बनाना चाहती है।

रचनाएँ : कविता–संग्रह नीहार, रश्मि, नीरजा, सांध्य–गीत, यामा, दीप शिखा और सप्तपर्णा (अनुदित कविताएँ)। **गद्य :** श्रृंखला की कड़ियाँ, अतीत के चलचित्र, पथ के साथी, क्षणदा, विवेचनात्मक गद्य आदि।

***

5. रामधारीसिंह 'दिनकर'

हिन्दी साहित्याकाश में 'दिनकर' जी का उदय एक असाधारण घटना है। वे हमारे युग के सर्वश्रेष्ठ कवि थे। 'दिनकर' जी का जन्म सिमरिया (मुंगेर जिला) नामक गाँव में हुआ। पटना विश्वविद्यालय से बी.ए. परीक्षा पास की। प्रारंभ में हाई स्कूल के प्रधानाध्यपक थे। बाद में बिहार सरकार के अधीन सब रजिस्ट्रार, बिहार सरकार के प्रचार विभाग के उप–निदेशक, मुजफ्फरपुर के कालेज में हिन्दी विभागाध्यक्ष तथा भारत सरकार के हिन्दी सलाहकार भी रह चुके हैं। ये राज्य सभा के सदस्य भी रहे हैं। भागलपुर विश्वविद्यालय ने डी.लिट् उपाधि देकर 'दिनकर' जी का सम्मान किया। भारत सरकार ने 'पद्मभूषण' प्रशस्ति प्रदान कर इनको गौरवान्वित किया।

रेणुका में भारत के अतीत के प्रति गौरव और वर्तमान अध:पतन से क्षोभ प्रकट हुआ है तो 'हुँकार' में क्रान्ति और विद्रोह का गान है। युद्धान्त भगवद्गीता 'कुरुक्षेत्र' में 'दिनकर' जी ने युद्ध समस्या का तार्किक विवेचन किया है। 'सामधेनी' में राष्ट्रीयता के भाव मुखरित हुए हैं। 'बापु' में गांधी स्तुति एवं गांधी जी की हत्या से कवि हृदय पर पड़े वज्रपात का वर्णन किया गया है। 'रश्मिरथी' में कर्ण का ओजपूर्ण चरित्रांकन हुआ है।

'उर्वशी' महाकाव्य में पुरुरवा और उर्वशी के प्रणय और प्रेम की महिमा का वर्णन हुआ है। 'उर्वशी' का दर्शन पक्ष है– प्रेम और ईश्वर, जीव और आत्म धरातल को परस्पर मिलाना। 'उर्वशी' में भाषा की सादगी, अलंकृति और अभिजात्य की चमक पहनकर आयी है।

रचनाएँ– काव्य : 'उर्वशी' (महाकाव्य), 'कुरुक्षेत्र' (खण्डकाव्य), 'रसवंती' (श्रृंगारकाव्य), 'रेणुका', 'हुँकार', 'सामधेनी' और 'परशुराम की प्रतीक्षा' (काव्य संग्रह)। गद्य रचनाएँ : 'संस्कृति के चार अध्याय', 'मिट्टी की ओर' आदि।

***

6. चन्द्रकान्त देवताले

जौलखेड़ा (जिला–बैतूल), म.प्र. में 7 नवम्बर, 1936 को जन्म। होल्कर कालेज, इन्दौर से 1960 में हिन्दी साहित्य में एम.ए.। सागर विश्वविद्यालय से मुक्तिबोध पर 1984 में पी.एच.डी.। छात्र जीवन में 'नई दुनिया', 'नवभारत' सहित अन्य अखबारों में कार्य। 1961 में म.प्र. शासन, उच्च–शिक्षा विभाग में।

पहली कविता नर्मदा–तट के कस्बे बड़वाह में 1952 में। 60 के बाद से पत्र–पत्रिकाओं में नियमित प्रकाशन। अशोक वाजपेयी द्वारा सम्पादित 'पहचान' सीरीज़ में प्रकाशित हड्डियों में छिपा ज्वर (1973), तथा दीवारों पर खून से (1975), लकड़बग्घा हँस रहा है (1980), रोशनी के मैदान की तरफ (1982), भूखंड तप रहा है (1982), आग हर चीज में बताई गई थी (1987) कविता–संग्रह।

समकालीन साहित्य के बारे में अनेक लेख, विचार–पत्र तथा टिप्पणियाँ भी प्रकाशित। अनुवाद में रुचि। अँग्रेजी, मलयालम, मराठी से कविताओं के हिन्दी अनुवाद। मराठी से 'दिलीप चित्रे की कविताएँ' अनुवाद प्रकाशित।

कविताओं के अनुवाद प्रायः सभी भाषाओं और विदेशी भाषाओं में भी। अँग्रेजी, जर्मन, बँगला, उर्दू, मलयालम के महत्त्वपूर्ण अनुवाद–संकलनों में कविताएँ। लम्बी कविता 'भूखंड तप रहा है' का मराठी में अनुवाद। प्रमुख हिन्दी कविता–संकलनों में भी कविताएँ प्रकाशित। 'आवेग' के अतिरिक्त अन्य लघु पत्रिकाओं से सम्बद्ध। ब्रेख्ट की कहानी 'सुकरात का घाव' का नाट्य रूपान्तरण।

सृजनात्मक लेखन के लिए 'मुक्तिबोध फैलोशिप' तथा 'माखनलाल चतुर्वेदी' कविता पुरस्कार से सम्मानित। वर्ष '86–87' में म.प्र. शासन का 'शिखर सम्मान'। उड़ीसा की 'वर्णमाला साहित्य–

संस्था' द्वारा 1993 में 'सृजन भारती सम्मान'। म.प्र. साहित्य परिषद के उपाध्यक्ष के अतिरिक्त नेशनल बुक ट्रस्ट, राजा राममोहन राय लाइब्रेरी संस्थान, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान आदि के सदस्य। केन्द्रीय साहित्य अकादमी के भी सदस्य रहे। 1987 में भारतीय कवियों के प्रतिनिधि दल के साथ अन्तर्राष्ट्रीय प्रेमिओ लित्तेरारिओ मोन्देल्लो, पालेर्मो (इटली) साहित्य समारोह में शिरकत।

सम्प्रति : शासकीय कला एवं वाणिज्य महाविद्यालय, इन्दौर में हिन्दी विभागाध्यक्ष तथा डीन, कला संकाय, देवी अहिल्याबाई विश्वविद्यालय, इन्दौर। स्थायी पता– 19 संवाद नगर, इन्दौर–452001।

***

7. राजेश जोशी

जन्म : 18 जुलाई, 1946 ।

जन्म स्थान : नरसिंहगढ़, मध्यप्रदेश।

कुछ प्रमुख कृतियाँ समरगाथा (लम्बी कविता), एक दिन बोलेंगे, पेड़, मिट्टी का चेहरा, दो पंक्तियों के बीच (कविता–संग्रह), पतलून पहना आदमी (मायकोवस्की की कविताओं का अनुवाद), धरती का कल्पतरू (भर्तृहरि की कविताओं का अनुवाद)।

विविध कविता–संग्रह 'दो पंक्तियों के बीच' के लिए 2002 का साहित्य अकादमी पुरस्कार सहित अनेक प्रतिष्ठित सम्मान और पुरस्कार से विभूषित।

***

8. बद्री नारायण

बद्री नारायण हिन्दी के महत्त्वपूर्ण कवि हैं। नवें दशक के कवियों में सर्वाधिक चर्चित। आप सामाजिक इतिहास एवं सांस्कृतिक मानव विज्ञान के विशेषज्ञ भी हैं। हिन्दी के एक प्रतिष्ठित कवि होने के साथा–साथ आप उत्तर भारत की आधारभूत राजनीतिक समझ और निर्मितियों की पहचान करने वाले समाजविज्ञानी के रूप में भी जाने जाते हैं।

आपके प्रकाशित कविता–संग्रह हैं :– 'खुदाई में हिंसा', 'शब्दपदीयम' और 'सच सुने कई दिन हुए'। आपकी प्रतिनिधि कविताओं की पुस्तक भी शीघ्र ही प्रकाशित होने वाली है। आप 'भारतभूषण अग्रवाल पुरस्कार', 'बनारसी प्रसाद भोजपुरी सम्मान', 'केदार सम्मान', 'स्पंदन कृति पुरस्कार', 'राष्ट्रकवि दिनकर पुरस्कार', 'शमशेर सम्मान', 'मीरा स्मृति सम्मान' से सम्मानित हो चुके हैं। आपकी कविताएँ अंग्रेजी, बांग्ला, उड़िया, मलयालम, उर्दू तथा अन्य भारतीय भाषाओं में अनूदित हो चुकी हैं। आपने देश–विदेश के अनेक साहित्यिक मंचों पर काव्य–पाठ किया है। आप कविता लिखने के साथ–साथ उस पर हो रहे चिन्तन एवं विमर्श के एक प्रखर हस्ताक्षर के रूप में भी जाने जाते हैं।

हिन्दी तुा अंग्रेजी के शीर्षस्थ पत्र–पत्रिकाओं में राजनीतिक विशेषणों पर आधारित आपके कॉलम भी प्रकाशित होते रहे हैं। आपके वैचारिक निबन्धों की कई पुस्तकें प्रकाशित हैं।

***

9. नरेन्द्र शर्मा

नरेन्द्र शर्मा का जन्म 28 फरवरी, 1913 ई. में गाँव जहांगीरपुर, परगना ज़ेवर, तहसील खुर्जा, जिला–बुलंदशहर (उत्तर प्रदेश) में हुआ था। 1931 ई. में इनकी पहली कविता 'चाँद' में छपी। शीघ्र ही जागरूक, अध्ययनशील और भावुक कवि नरेन्द्र ने उदीयमान नए कवियों में अपना प्रमुख स्थान बना लिया। लोकप्रियता में इनका मुकाबला हरिवंशराय बच्चन से ही हो सकता है।

1933 में इनकी पहली कहानी प्रयाग के 'दैनिक भारत' में प्रकाशित हुई। 1934 ई. में इन्होंने मैथिलीशरण गुप्त की काव्यकृति 'यशोधरा' की समीक्षा भी लिखी। सन् 1938 ई.में कविवर सुमित्रानंदन पंत ने कुंवर सुरेश सिंह के आर्थिक सहयोग से नए सामाजिक, राजनीतिक, आर्थिक स्पंदनों से युक्त 'रूपाभ' नामक पत्र के संपादन का निर्णय लिया। इसके संपादन में सहयोग दिया नरेन्द्र शर्मा ने। भारतीय संस्कृति के प्रमुख ग्रंथ 'रामायण' और 'महाभारत' इनके प्रिय ग्रंथ थे। महाभारत में रुचि होने के कारण ये 'महाभारत' धारावाहिक के निर्माता बी.आर.चोपड़ा के अंतरंग बन गए। इसलिए जब उन्होंने 'महाभारत' धारावाहिक का निर्माण प्रारंभ किया तो नरेन्द्रजी उनके परामर्शदाता बने। उनके जीवन की अंतिम रचना भी 'महाभारत' का यह दोहा ही है :– शंखनाद ने कर दिया, समारोह का अंत, अंत यही ले जाएगा, कुरुक्षेत्र पर्यन्त। 11 फरवरी 1988 को हृदय गति रुक जाने से उनका देहावसान हो गया।

नरेन्द्र शर्मा जी ने हिन्दी साहित्य की 23 पुस्तकें लिखकर श्रीवृद्धि की है, जिनमें प्रमुख हैं :– प्रवासी के गीत, मिट्टी और फूल, अग्निशस्य, प्यासा निर्झर, मुठ्ठी बंद रहस्य (कविता–संग्रह), मनोकामिनी, द्रौपदी, उत्तरजय सुवर्णा (प्रबंध काव्य), आधुनिक कवि, लाल निशान (काव्य संचयन), ज्वाला परचूनी (कहानी संग्रह, 1942 में

'कड़वी मीठी बात' नाम से प्रकाशित), मोहनदान करमचन्द गांधी : एक प्रेरक जीवनी, सांस्कृतिक संक्रांति और संभावना (भाषण)। लगभग 55 फिल्मों में 650 गीत एवं 'महाभारत' का पटकथा–लेखन और गीत–रचना।

***

10. ओमप्रकाश वाल्मीकि

जन्म : 30 जून, 1950 बरला, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

शिक्षा : एम.ए.।

प्रकाशित कृतियाँ : 1. सदियों का सन्ताप (कविता संग्रह), 2. बस्स ! बहुत हो चुका (कविता संग्रह), 3. संकलित कवि – दर्द के दस्तावेज, इन दिनों, उत्तर हिमानी, 4. हिन्दी की अनेक पत्र–पत्रिकाओं में लेख, कविताएँ एवं कहानियाँ प्रकाशित, 5. अँग्रेजी, बँगला, मराठी, गुजराती, पंजाबी एवं उर्दू में रचनाएँ अनूदित एवं प्रकाशित।

अन्य – 1. डॉ. अम्बेडकर राष्ट्रीय पुरस्कार से सम्मानित, 2. अभिनय एवं निर्देशन के लिए दर्जनों पुरस्कार, 3. परिवेश–सम्मान, 1995, 4. प्रथम हिन्दी दलित लेखक–साहित्य सम्मेलन, नागपुर 1983 के अध्यक्ष, 5. दलित साहित्य के प्रमुख हस्ताक्षर, 6. 'आत्मकथा' शीघ्र प्रकाश्य, 7. अनेक सामाजिक, साहित्यिक संस्थाओं से सम्बद्ध, 8. 'प्रज्ञा–साहित्य' के दलित–साहित्य विशेषांक का अतिथि सम्पादन।

सम्प्रति : भारत सरकार के रक्षा मंत्रालय (उत्पादन विभाग) के संस्थान में सेवारत।

सम्पर्क : 1, न्यू रोड स्ट्रीट, कलालों वाली गली, देहरादून–248001 (उ.प्र.)

***

परिशिष्ट

वैज्ञानिक शब्दावली :

1.	Abductor	अपवर्तनी
2.	Access	अभिगम
3.	Active	सक्रिय, क्रियाशील
4.	Adaptive	अनुकूली
5.	Adverse	अक्षोन्मुख
6.	Bacteria	जीवाणु
7.	Baculllum	शिश्नास्थि
8.	Bandage	पट्टी
9.	Bending Energy	बंकन ऊर्जा
10.	Barometer	वायुदाबमापी
11.	Capillarity	कोशिकात्व
12.	Capsule	संपुटिका
13.	Cardiac	हृदयी
14.	Cell	कोशिका
15.	Dart	प्रासक
16.	Decay Chian	क्षय–श्रृंखला
17.	Density	घनत्व, सघनता
18.	Determination	निर्धारण

19.	Diabetes	मधुमेह
20.	Echogram	प्रतिध्वनिलेख
21.	Eclipse	ग्रहण
22.	Ecology	पारिस्थितिकी
23.	Elastic	प्रत्यास्थ
24.	Fabric	संविन्यास
25.	Factor	घटक
26.	Fibre	रेशा
27.	Floret	पुष्पक
28.	Geyser	उष्णोत्स
29.	Gland	ग्रन्थि
30.	Glide	विसर्पण
31.	Hybrid	संकर
32.	Hydrology	जलविज्ञान
33.	Hypogenic	अधोजनित
34.	Illumination	प्रदीप्ति
35.	Image Ratio	प्रतिबिम्ब अनुपात
36.	Imitative	अनुकारी
37.	Implants	अन्तर्रोप
38.	Layer Line	स्तरीय रेखा

39.	Leaflet	पर्णक, पत्रक
40.	Leech	जोंक, जलूका
41.	Light Amplifier	प्रकाश प्रवर्धक
42.	Machine Control	यांत्रिक नियंत्रण
43.	Macro Axis	दीर्घ अक्ष
44.	Microscope	सूक्ष्मदर्शी
45.	Mineral	खनिज
46.	Narrow	संकीर्ण,बाटीक
47.	Natural Resource	प्राकृतिक संसाधन
48.	Normal	सामान्य, साधारण
49.	Objects	वस्तु, बिम्ब
50.	Octopus	अष्टभुज

***